139 P
577
H
MICROFILM

891.431
N121N
1307
10/71

* सत श्री अकाल वंदेमातरम् अल्लाहोअकबर *

नादरशाही ज़माना

नुसख़ा मर्ज़ राय बहादुरी ।

5717

प्रकाशक

रघुवीरप्रसाद शर्म्मा

दकुरा पो० बरौली,

(अलीगढ़) ।

पं० रघुवरचंद्र व० के प्रबंध से रेवा विलास प्रेस में मुद्रित ।

* न पूछो *

न पूछो अहले यूरुप को हम क्या करके छोड़ेंगे ।
किया है हम को नंगा हम भी नंगा करके छोड़ेंगे । १ ।

हमेशा दाव देकर हमसे बाज़ी जीत लेते हैं ।
दिवाली आने दो हमभी दिवाला करके छोड़ेंगे । २ ।

कुतुब खाना बरेली पर किया क़बज़ा तो क्या डर है ।
इरादा है कि "लंदन" पर भी क़बज़ा करके छोड़ेंगे । ३ ।

वे यों का गुल्ला भर भर लेजांय नहीं परवा ।
लेकिन यह भूके हिन्दी भी एक एक का बदला लेके छोड़ेंगे । ४ ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 577
Date 14.12.71
GOVT. OF INDIA

* ग़ज़ल *

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना ।
प्यारे वतन को इस दम आजाद है मनाना ॥ १ ॥
बुज़दिली को हरगिज़ न पास दो फटकने ।

आख़िर ये दम अदम को होगा कभी रवाना ॥ २ ॥
स्वतंत्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुम को गर नाम है चलाना ॥ ३ ॥
अब देश भर के नेता सब जेल में पड़े हैं।
तब फिर तुम्हें भी यारो लाज़िम है जेल जाना ॥ ४ ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उन को हराम है अब भारत का आबोदाना ॥ ५ ॥
दिल में न ख़ौफ़ खाओ आगे क़दम बढ़ाओ।
है स्वर्ग से भी बढ़कर इस वक्त जेलखाना ॥ ६ ॥
माता की कोख क्योंकर करते हो तुम कलंकित।
"वालन्टियर" बनो अब बस छोड़दो बहाना ॥ ७ ॥

नहिं रखनी सरकार (नौकरशाही) ज़ालिम

नहिं रखनी नहिं रखनी सरकार ज़ालिम नहिं रखनी

मुसलमान मक्का का खोया—

सिक्खों का दरबार—ज़ालिम०

जलियां वाले बाग़ के अन्दर—निः शस्त्रों पर गोली चलाकर०

मारे कई हज़ार—ज़ालिम नहिं०

अली भाई को पिंजड़े पाया—गांधी जी को पकड़ मुखाया

करती है अत्याचार—ज़ालिम नहिं०

लालाजी को पिंजड़े पाया—सी० आर० दास को पकड़ मुखाया

यह देखो इंसाफ़ ज़ालिम नहिं रखनी०

खुफ़िया जाल हिन्द में डाला—घर २ में लगवा दिये ताला

खोलदिये चोर बज़ार—ज़ालिम०

गुरु द्वारे पर कब्ज़ा किया—सिक्खों को भी कैद किया

सिक्ख जन मारे हज़ार—ज़ालिम०

परमेश्वर से विनती मेरी—हो जांय अभी लंदन की ढेरी

" रघुबीर ,, करे पुकार—ज़ालिम०

पार्टी अपनी क़ौमी बनाकर

लेंगे स्वराज ससुराल जाकर

अब तो चमका मुकद्दर का तारा

रञ्जो ग़म दूर होगा हमारा

नारा अल्लाहो अकबर लगाकर—लेंगे०

डर नहीं जेलख़ाने से हम को

काम [illegible] [illegible] से हम को
जाते हैं जेल खुशियां मनाकर — लेंगे

जेलखाना है ससुराल का घर
घर में ससुराल के माल की भर
सर पर दुश्मन के डंका बजाकर — लेंगे०

हम तो जाते हैं अब तुम संभालो
काले भाई की सुनो ऐ कालो
गोरा चमड़ा रहेंगे मिटाकर — लेंगे०

जेलखाना है ससुराल सब की
उस में जाकरके पीसेंगे चक्की
नाम जिन्दों में अब हम लिखाकर — लेंगे०

मरद मैदां है गांधी जी का
और किचलू व शौकतअली का
हुक्म दिल और जां से बजाकर — लेंगे०

जेलखाने का कुछ डर नहीं है
फांसी पाने का कुछ भय नहीं है
हम तो दुश्मन का बेड़ा डुबाकर — लेंगे०

या इलाही हमें जो सतावे
चैन दुनियां हरगिज़ न पावे
तेरी रहमत को हमराह लाकर — लेंगे०

॥ ग़ज़ल ॥

पापियो पंजा तुम्हारा पड़ गया पंजाब पर ।
ज़ालिमो तुमने सिकंजा कस लिया पंजाब पर । १ ।
अमृतसरोवर को सरासर खून ही सर कर दिया ।
कौम के खूं का बहाया हा ! दिया पंजाब पर । २ ।
मारशाल्ला का बखेड़ा खूब ही फैला दिया ।
भूलकर नेकी हुये तुम बेहया पंजाब पर । ३ ।
रेंग कर हमको चलाया प्यास से मारा हमें ।
नाक घिसवाई न कुछ आई दया पंजाब पर । ४ ।
जिन कलेजों से तुम्हारी जान जरमन से बची ।
उन कलेजों का बनाकर मय पिया पंजाब पर । ५ ।
फूल का बदला कहो क्यों शूल से तुमने दिया ।
खलता है आंख में जो कुछ किया पंजाब पर । ६ ।
" नैपोलियन " से आपकी पंजाब ने लज्जा रखी ।
हम कहें " इङ्गलैंड " भारत में जिया पंजाब पर ७

❀ नुसख़ा मर्ज़ रायबहादुरी ❀

भाइयो आजकल भारत के ग़ुलामी में जकड़जाने के कारण रायबहादुरी का मरज बहुत बढ़ गया जिस की दवा कोई हकीम या डाकटर भी नहीं कर सकता इसी लिये मैं रायबहादुरी चाहने वालों के लिये यह नुसख़ा नीचे लिखे देता हूं कि वह इस्तेमाल में लाकर फायदा उठावें ।

तुख्म खुद गरज़ी,	५ मासे ०	नमक हरामी,	३ मासा
बेईमानी	१ तोला ०	तुख्म चुगलखोरी	१ तोला
तुख्म चापलोसी	३ अदद ०	मक्कारी	१ मासा
रौब दौब	६ मासा ०	देश द्रोह	८ मासा
राज भक्ति	१० मासा ०		

इन उक्त चीजों को लेकर रिश्वत के खरल में डाल कर और जी हजूरी के सोटे से इतना रगड़े कि यह चीजें खूब महीन हो जाय बाद को १ सेर पानी में मिला कर बे-शर्मी की हंडी पर चढ़ावे और उसके नीचे हसरत की

आंच जलावे और जब उस में २ या ३ उबाल आलें तब तास्सुब की छलनी में छान कर खुद किस्मती के कटोरे में रक्खें और बिला किसी के टोके ७ रोज़ तक पिये तो मर्ज़ रायबहादुरी दूर हो जायगा—लेकिन कभी देशी भाइयों की खिदमत न करें वरना इस परहेज के बिगड़ने पर मरज़ बढ़ जावेगा और कोई भी दवा न कर सकेगा ॥

दवा मिलने का—ठिकाना

एम० एम० बी० एल० एल० डैम ब्लाडी

गुलाम नादिर शाह एण्ड को०

हरएक शहर

इस मर्ज़वालों का शुभ चिन्तक

रघुवीरप्रसाद शर्म्मा